दलहन उत्पादन में इजाफा करेंगी मसूर एवं मटर की नई प्रजातियां

उत्तराखण्ड राज्य की राज्य प्रजाति विमोचन समिति द्वारा हाल ही में मसूर की पंत मसूर 9 तथा मटर की दो पंत मटर 155 एवं पंत मटर 157 को किसानों द्वारा उत्तराखण्ड राज्य में उगाए जाने हेतु विमोचित किया गया है। पूर्व में किसानों द्वारा मसूर तथा मटर की उगाई जा रही विभिन्न प्रजातियां विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कीटों से ग्रसित हो गई थी, जिससे कि किसान को प्राप्त होने वाली उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा था तथा रोगों एवं कीटों की रोगथाम करने में अतिरिक्त उत्पादन लागत आ रही थी। जिससे कि किसानों की आय में कमी होती जा रही थी। इन परिस्थितियों में रबी दलहन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विगत में रोग एवं कीट अवरोधी तथा अधिक उपज देने वाली मसूर एवं मटर की प्रजातियों के विकास हेतु शोध कार्य आरम्भ किये गये। जिसके परिणाम स्वरूप यह प्रजातियॉं विकसित की जा सकी। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ मंगला राय द्वारा नवीन प्रजातियों, मसूर की पंत मसूर 9 तथा मटर की पंत मटर 155 एवं पंत मटर 157 को किसानों द्वारा उगाये जाने के लिए जारी किए जाने पर विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ जे0पी0 सिंह तथा दलहन प्रजनन परियोजना में कार्यरत वैज्ञानिकों डॉ आर0के0 पंवार, डॉ एस0के0 वर्मा एवं डॉ अन्जू अरोरा को हार्दिक बधाई दी। डॉ मंगला राय जोकि एक प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक भी हैं द्वारा बताया गया कि देश में दलहन उत्पादन बढ़ाने में नई अधिक उपज देने वाली तथा विभिन्न रोगों एवं कीटों के लिए अवरोधी प्रजातियों का विशेष महत्व है। कुलपति डॉ मंगला राय द्वारा यह भी बताया गया कि भारत सरकार द्वारा दलहन उत्पादन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है जिस हेतु छोटे एवं सीमान्त किसान जोकि मुख्य रूप से दलहन की खेती करते है को विभिन्न दलहनी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। उनके द्वारा इन नई प्रजातियों एवं इनके उत्पादन की तकनीकों के व्यापक प्रचार प्रसार पर विशेष बल दिया गया ताकि किसानों को यथाशीघ्र इनका लाभ मिल सके। इस अवसर पर निदेशक शोध डॉ जे0पी0 सिंह द्वारा अवगत कराया गया कि देश के दलहन उत्पादन में पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय द्वारा जारी की गयी किस्मों का विशेष महत्व है। पन्त विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई मसूर की प्रजातियॉं ना केवल सम्पूर्ण भारत में उगायी जा रही है बल्कि पड़ोसी देशों नेपाल, भूटान एवं बांग्लादेश में भी इनको उगाया जा रहा है। डॉ सिंह द्वारा यह भी बताया गया कि पंत मसूर 9 एक छोटे दाने वाली मसूर की किस्म है जोकि किसानों एवं बाजार की मांग के अनुरूप है तथा आने वाले समय में मसूर एवं मटर की इन नई प्रजातियों के कारण दलहन के उत्पादन में आशातीत वृद्धि होगी।

पंत मसूर 9 किस्म पंत मसूर 5 X आई0पी0एल0 105 के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परीक्षणों में इसकी औसत उपज 14–16 कु0/है0 पायी गई। जोकि मानक प्रजाति पंत मसूर 406 से 11 प्रतिशत एवं पंत मसूर 5 से 23.7 प्रतिशत अधिक थी। इसका दाना छोटे आकार होता है। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी इसकी औसत उपज मानक प्रजातियों से अधिक पायी गई। 100 दानों का वजन लगभग 2.62 ग्राम है। इसके दाने गहरे भूरे रंग के होते है तथा बनने वाली दाल हल्की नारंगी रंग की होती है। यह प्रजाति मसूर की प्रमुख बीमारी गेरुई (रस्ट) तथा उकठा (विल्ट) के लिए तथा फली छेदक कीट के लिए अवरोधी है। इसकी परिपक्वता अवधि 120–125 दिन है। भविष्य में यह प्रजाति पुरानी प्रजातियों पंत मसूर 406 एवं पंत मसूर 639, जिनकी औसत पैदावार काफी कम है तथा जो विभिन्न रोगों से ग्रसित हो गई है, के स्थान पर किसानों द्वारा उगायी जायेंगी, जिससे मसूर के उत्पादन में व्यापक बढ़ोत्तरी होने की पूरी संभावनाएं है।

पंत मटर 155 किस्म पंत मटर 13 x डी0डी0आर0 27 के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परीक्षणों में इसकी औसत उपज 1731 किग्रा0/है0 पायी गई। जोकि मानक प्रजाति पंत मटर 14 से 10.17 प्रतिशत एवं पंत मटर 42 से 11.67 प्रतिशत अधिक थी। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी इसकी औसत उपज 2370 किग्रा0/है0 पायी गई। इस प्रजाति के 100 दानों का वजन लगभग 20 ग्राम है। यह प्रजाति मटर की प्रमुख बीमारी चूर्णी फफूंदी एवं गेरुई रोगों के लिए तथा फली छेदक कीट के लिए अवरोधी है। इसकी परिपक्वता अवधि लगभग 125–130 दिन है।

पंत मटर 157 किस्म एफ0सी0 1 x पंत मटर 11 के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परीक्षणों में इसकी औसत उपज 1695 किग्रा0/है0 पायी गई। जोकि मानक प्रजातियों से अधिक थी। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी इसकी औसत उपज 2290 किग्रा0/है0 पायी गई। इस प्रजाति के 100 दानों का वजन लगभग 19 ग्राम है। यह प्रजाति मटर की प्रमुख बीमारी चूर्णी फफूंदी एवं गेरुई रोगों के लिए तथा फली छेदक कीट के लिए अवरोधी है। इसकी परिपक्वता अवधि 125–130 दिन है।

पंत मसूर 9

पंत मटर 155

पंत मटर 157